Nai Dunia (Indore), 17th March 2023, Page – 01

एक और छलांग

19 मार्च को इंदौर में शुरू हो रहा वीएलएसआइ सोसाइटी का केंद्र

सेमीकंडक्टर हब का सपना पूरा करेगा आइआइटी

गजेन्द्र विश्वकर्मा • इंदौर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में कदम बढ़ाते हुए अब माइक्रोचिप डिजाइन का केंद्र बनने की ओर अग्रसर हो गया है। संस्थान में वेरीलार्ज स्केल इंटीग्रेशन (वीएलएसआइ) से संबंधित काम होगा, जिसके तहत विभिन्न तरह की सेमीकंडक्टर की डिजाइन तैयार कर इसे मैन्युफैक्चरिंग किया जा सकेगा। इसके लिए संस्थान को वीएलएसआइ सोसाइटी आफ इंडिया का साथ मिल गया है।

सोसाइटी मध्य प्रदेश का अपना पहला केंद्र आइआइटी परिसर में 19 मार्च से शुरू करने जा रहा है। इससे आइआइटी चार वर्ष से जिस सेमीकंडक्टर तकनीक पर कार्य करने के लिए उत्साहित था उसे गति मिल सकेगी।

संस्थान में 19 मार्च को केंद्र की स्थापना के समय एमपी स्टेट इलेक्ट्रानिक्स डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड के एएमडी आइएएस अंशुल गुप्ता, वीएलएसआइ सोसाइटी आफ इंडिया के प्रेसीडेंट डा. सत्या गुप्ता, वीई कमर्शियल व्हीकल पीथमपुर के प्रोडक्ट डिजाइन एवं डेवलपमेंट के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट सचिन अग्रवाल, सीमेंस कंपनी के कंटी मैनेजर रुचिर दीक्षित, भारत सरकार के इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन के निदेशक निशित गुप्ता, आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी सहित कई सदस्य मौजूद रहेंगे।

फायदा

शहर में हो सकेगी सेमीकंडक्टर की डिजाइन और मैन्युफैक्चरिंग

आइआइटी इंदौर का आकर्षक परिसर। • फाइल फोटो

अब विदेश से नहीं मंगवाने पड़ेंगे

सेमीकंडक्टर का उपयोग वाहनों, इलेक्ट्रिक व इलेक्ट्रानिक्स उपकरणों और कई मशीनों में होता है। कोरोना के समय भारत में इसकी कमी से आटोमोबाइल सहित कई क्षेत्र प्रभावित हुए थे। इसके बाद केंद्र सरकार ने क्षेत्र को विकसित करने के लिए 76 हजार करोड़ रुपये का फंड बनाया। सेमीकंडक्टर की पूर्ति के लिए भारत को ताईवान, चीन, साउथ कोरिया, जापान और अन्य देशों पर निर्भर रहना पड़ता है।

बाहरी कंपनियां होंगी आकर्षित

आइआइटी इंदौर के प्रो. संतोष कुमार सिंह का कहना है कि भारत सरकार सेमीकंडक्टर क्षेत्र को बढ़ावा दे रही हैं। इसके लिए करोड़ों रुपये का फंड तैयार किया गया है। अब वीएलएसआइ सोसाइटी का मध्य प्रदेश चैप्टर परिसर में शुरू होने से देश-दुनिया के सभी साधन आसानी से मौजूद हो सकेंगे। इसका लाभ प्रदेश को भी मिलेगा। चैप्टर आने से बेंगलुरु व अन्य क्षेत्रों में मौजूद सेमीकंडक्टर बनाने वाली कंपनियां भी प्रदेश की ओर आकर्षित होगी।